***जय जगदीश हरे आरती***

ॐ जय जगदीश हरे,स्वामी जय जगदीश हरे  
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट,क्षण में दूर करे   
ॐ जय जगदीश हरे  
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का.स्वामी दुख बिनसे मन का  
सुख सम्पति घर आवे, सुख सम्पति घर आवे,कष्ट मिटे तन का   
ॐ जय जगदीश हरे  
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी,स्वामी शरण गहूं मैं किसकी   
तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा,आस करूं मैं जिसकी   
ॐ जय जगदीश हरे  
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी,स्वामी तुम अंतरयामी  
पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर,तुम सब के स्वामी   
ॐ जय जगदीश हरे  
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता,स्वामी तुम पालनकर्ता  
मैं मूरख खल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी,कृपा करो भर्ता   
ॐ जय जगदीश हरे  
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,स्वामी सबके प्राणपति  
किस विधि मिलूं दयामय, किस विधि मिलूं दयामय,तुमको मैं कुमति   
ॐ जय जगदीश हरे  
दीनबंधु दुखहर्ता, ठाकुर तुम मेरे,स्वामी ठाकुर तुम मेरे   
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ,द्वार पड़ा तेरे   
ॐ जय जगदीश हरे  
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,स्वमी पाप हरो देवा  
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,संतन की सेवा   
ॐ जय जगदीश हरे  
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे   
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट,क्षण में दूर करे   
ॐ जय जगदीश हरे -